

" (सं) श्री राम "

11-6-9-69.

" 2 वी वार "

" गुरुर ज्ञाना, गुरुर विष्णु, गुरुर देवा मरुद्वर " /
गुरुर साक्षात् परब्रह्म, तस्मिन् श्री गुरुरै नमः -

श्री शंकर लज्जाननु लज्ज -

शंभु शरणे पडी! मागु घडी रे घडी, तू सपर्य!!

ह्या तरी दर्शन शीव आपनी!

तमे लतांना दिल लुगारा!!

शुभ सुरुनु सदा तरगारा।

हुंगा मंदमति! तारी अतप गति! तू सपर्य..... (ह्या तरीने दर्शन).

संगे लक्ष्म स्मशाननी सोली!!

संगे शिवा सदा लून योली।

लाले गिलत तडुं! कुंडे पिस धडुं! अमृत आपनी! (ह्या तरीने दर्शन).

नेति नेति ज्यां लोटे तरेष्टी!

मांडुं यिगाडुं त्यां प्रवा अरेष्टी!

सारा जगमां ह्ये नुं, वसु तारा मांडुं! शक्ति आपनी! (ह्या तरी दर्शन)

हुंगा अतल पंधा प्रवासी!!

घनां आपतम मि रे उदासी!

पाथ्यां मथा रे मथा, सरण तडुनु गथा, समभण आपनी! (ह्या तरी दर्शन).

आपो प्रष्टि मां तरे अनायु!!

सारी सुखीने शीवरुप देणु!

मारा मनमां वसनी ह्ये आपी वसनी शांती आपनी..... (ह्या तरी दर्शन).

निध संधानु शुभ धन आपनी!

लोका शंकर लव दुप सपर्य!

राजा मान मेदा - गाजा गरव सदा, लडिता आपनी..... (ह्या तरी दर्शन).

शंभु शरणे पडी रे मागु घडी रे घडी.....

तू सपर्य..... ह्या तरीने दर्शन शीव आपनी!... (3-9)

शंभु.